Phase: IX (Indl.), Sector 66-A,
Ajitgarh (Mohali)-160062.

Chief Guest
Shri. Naushad H. Gayoor
Eminent Artist
(J&K)

PRINTMAKING

& SCULPTURE.
Opening on
6th October at 11:00 am,
Chief Guest
Shri. Naushad H. Gayoor
(J&K)
PRINTMAKING
SCULPTURE

ART SPACE
AJITGARH
Studio
WORKSHOP ON PRINTMAKING,
PAINTING & SCULPTURE.
Opening on
9th October at 11:00 am,
will continue till 10th. Oct.2018
between 9:00 am to 5:30 pm
Chief Guest
Shri. Naushad H. Gayoor
(J&K)
PAINTING

ART SPACE
AJITGARH
Studio
WORKSHOP ON PRINTMAKING,
PAINTING & SCULPTURE.
Opening on
6th October at 11:00 am,
will continue till 10th. Oct.2016
between 9:00 am to 5:30 pm
PAINTING

Activa

WORKSHOP ON PRINTMAKING,
PAINTING & SCULPTURE.
Opening on
Chief Guest
(J&K)
PRINTMAKING
SCULPTURE

Malkit Singh
Director,
Artspace Ajitgarh
PAINTING
PRINTMAKING
SCULPTURE
SUNIL KUMAR (CHANDIGARH)
CHANDNI (CHANDIGARH)
CHANDRIKA SHARMA (CHANDIGARH)
RAMAN BAGDI (CHANDIGARH)
JAIDEEP SAINI (PANCHKULA)
BALWANT SINGH (AMRITSAR)

Art for artists' sake

Artspace, a Mohali-based art studio, aims to create a web of artists, collectors and buyers

Artists participate in a workshop on print-making, painting and sculpture at Art Space PHOTO: RAVI KUMAR

AMARJOT KAUR

A student of applied arts department at University of Kashmir in Srinagar, 24-year-old Aasif Haneef finds a cosy corner at Artspace Ajitgarh, an independent art studio in Mohali's Industrial Area IX, Plot No. 221, Sector 66-A. He is accompanied by two other students and his teacher Naushad Gayoor is the chief guest for an ongoing painting, sculpting and printmaking workshop that has been organised by 'Silent'—a group of artists.

Alternating between studying a blank sheet of paper and surfing through a few pictures of his previous artworks on his mobile phone, Aasif is looking to extend the series he has been working on for some time now. Sitting right next to him, Arona Riyaz (21) has already started sketching. She's painting a self portrait that highlights the scars and stitches on her face. "I'd met with an accident and this is how I looked like at that time," she says, reminding one of Frida Kahlo's 1944 self-portrait The Broken Column.

> I BOUGHT THIS PLACE SOME TEN YEARS AGO AND IT HAS BEEN FUNCTIONING SINCE 2011. ARTISTS COME AND STAY HERE FREE OF COST. IN FACT, WE HAVE TWO TO THREE ARTISTS HERE AT ALL TIMES
>
> CHILDREN WHO PASS OUT OF ART COLLEGES ARE PRETTY MUCH CLUELESS ABOUT THE EARNING AVENUES. THEY HOST EXHIBITIONS, AND PAY A HEAVY RENT TO GALLERIES. MALKIT SINGH

The director of Artspace Ajitgarh, Malkit Singh, a retired IRS officer, is content with the turnout. Some 60 senior and junior artists have taken fondly to his artists' retreat. There are printmaking machines and a big workshop hall with artworks of famous Indian artists like Amrita Shergil and MF Husain painted on its walls. There's a small pantry that also serves as a kitchen and there are rooms for artists to stay in too. Malkit's favourite place of the studio, however, is the library on th first floor right next to the mai entrance. "I bought this place som ten years ago and it has been fun tioning since 2011. Artists come an stay here free of cost. In fact, w have two to three artists here at a times," he says.

Malkit, an art enthusiast, enjoy painting once in a while, but it's a literature that tugs at his hear strings. "In a span of 50 years, have collected some 2,000 book on art," he says, looking affectio ately at the two book-laden cu boards of studio library. Havin stayed in Nasik, Mumbai and eve Chandigarh, for a while, Malk observes that art organisation even those that are funded by th government, have not been able assist artists in making a profe sional career out of painting. Wit Artspace, he plans to create a we of artists, collectors and buyers.

The workshop will continue t October 10 and will be followed b an exhibition that will translate th dialogue between brush, chise and paints.

city life

CHANDIGARH, SUNDAY, 07/10/2018

03

CITY HI LIFE

लेट्स यूनाइट इनिशिएटिव पार्टी का सेलिब्रेशन

TRAVEL

• निखिल दीप सिंह
ट्रेवलर

यहां दूर-दूर तक है हरियाली ही हरियाली

कई बार तीन-चार दिन के लिए शहर से दूर बाहर घूमने जाने का मन करता है। इसके लिए दूधपथरी सबसे बेहतर जगह है, जो जम्मू-कश्मीर में है। श्रीनगर से इसकी दूरी 40 किलोमीटर है। मैं इन दिनों यहीं पर घूमने के लिए आया हूं। जिधर भी नजर मारो तो हरियाली ही हरियाली है। पेड़-पौधे और खूबसूरत वादियां। झरने भी यहां बहुत हैं। यहां फैमिली के साथ भी जा सकते हैं और फ्रेंड्स के साथ भी।

मौसम की बात करें तो अभी यहां 7 डिग्री टेम्प्रेचर है। प्लान बनाने से पहले गर्म कपड़ों की पैकिंग जरूर करें। तभी घूमने का मजा उठा सकते हैं और सफर को यादगार बना सकते हैं। रही बात ठहरने की तो यहां सरकारी गेस्ट हाउस है। पहले से ही बुकिंग करवा लें, ताकि बाद में कोई परेशानी न उठानी पड़े। ट्रैकिंग करने के लिए भी यहां ऑप्शन है। यानि एडवेंचर का भी मजा ले सकते हैं। दूधपथरी का मतलब है "दूध की घाटी"। इसका नाम यह कैसे पड़ा, इसके पीछे कई कहानियां हैं। कुछ लोग कहते हैं कि घास के किनारे पर बहने वाली नदी इतने बहाव से नीचे की ओर गिरती है कि इसका पानी का बहाव एकदम दूध की तरह दिखता है। इसलिए इसे दूधपथरी कहा जाता है। इसके अलावा एक और कहानी है कि कश्मीर के एक प्रसिद्ध संत ने एकबार जमीन से पानी निकालने के लिए प्रार्थना की, जैसे ही उन्होंने अपनी छड़ी से खोदाई की तो उसमें से दूध की धार बहने लगी।

स्टूडेंट्स का ग्रुप 'सायलेंट' लेकिन इनका काम बोलता है

Art Workshop

शनिवार को सेक्टर-66 मोहाली स्थित आर्टस्पेस में सायलेंट ग्रुप की प्रिंटमेकिंग, पेंटिंग और स्कल्प्चर वर्कशॉप शुरू हुई। इसमें अलग-अलग शहर के 60 स्टूडेंट्स ने हिस्सा लिया।

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

आर्ट को लेकर शहर में बहुत-सी एग्जीबिशंस, वर्कशॉप्स और सेमिनार होते रहते हैं। जहां प्रोफेशनल और अमेच्योर आर्टिस्ट्स अपने आर्टवर्क को दिखाते करते हैं। पर आर्ट के स्टूडेंट्स के लिए ऐसा कोई प्लेटफॉर्म नहीं होता। ये स्टूडेंट्स अपने कॉलेज में लगने वाली एनुअल आर्ट एग्जीबिशंस तक ही सीमित होकर रह जाते हैं। उन्हें अपने टैलेंट को दिखाने और एक अच्छे एक्सपोजर के लिए कोई ठोस प्लेटफॉर्म नहीं मिलता। ऐसे ही स्टूडेंट्स के लिए एक आर्ट ग्रुप शुरू किया गया, जिसका नाम है- सायलेंट। यहां सायलेंट का मतलब चुप रहना नहीं, बल्कि आर्टिस्ट का काम बोलने से है। जहां उनका काम ही उनके व्यक्तित्व और उनकी सोच को बयां करेगा। शनिवार को सेक्टर-66 मोहाली स्थित आर्टस्पेस अजीतगढ़ स्टूडियो में सायलेंट ग्रुप ने प्रिंट मेकिंग, पेंटिंग और स्कल्प्चर वर्कशॉप की शुरुआत की है। इसमें पंजाब, पंचकूला, पटियाला, चंडीगढ़, अंबाला, कश्मीर से आए 60 स्टूडेंट्स और प्रोफेशनल आर्टिस्ट्स हिस्सा ले रहे हैं। इसका उद्घाटन श्रीनगर से आए कलाकार नौशाद एम गागू ने किया। सेक्टर-10 स्थित गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट से असिस्टेंट प्रोफेसर लखविंदर इस ग्रुप के संस्थापक हैं। उन्होंने बीएफए के स्टूडेंट्स के साथ मिलकर यह ग्रुप को बनाया।

• कश्मीर में पेंटिंग करती आर्टिस्ट।

एक-दूसरे से बात कर कॉन्फिडेंस बढ़ता है

ग्रुप के मेंबर और बीएफए फोर्थ ईयर के स्टूडेंट जसकरनजीत सिंह कहते हैं कि इस ग्रुप में आपस में बातचीत से एक्सचेंज मिल रहा है, साथ ही वे अपने काम को देखकर भी प्रमोट भी कर रहे हैं। बीएफए थर्ड ईयर के स्टूडेंट अमित कुमार ने कहा कि इससे जुड़ने के बाद उन्हें पता चल गया है कि वह अपना काम कहां और कैसे प्रेजेंट करेंगे। वहीं एमएफए की स्टूडेंट [illegible] ने कहा कि सभी आर्टिस्ट्स का आपस में इंटरेक्शन होता है। इससे क्रिएटिविटी और निखरकर सामने आती है। कॉन्फिडेंस भी बढ़ता है। क्रिटिसिज्म भी होता है लेकिन वो भी पॉजिटिव के लिए ही होता है।

कश्मीर के कई एरिया में कैनवास पर उभरता है मजबूत एक्सप्रेशन

श्रीनगर स्थित आर्ट कॉलेज के फैकल्टी नौशाद एम गागू ने बताया- साल 2010 में मैं पहली बार चंडीगढ़ में आयोजित

एक आर्ट कैंप में हिस्सा लेने आया था। उसके बाद से लगातार यहां आ रहा हूं। कश्मीर के हालात का उनके काम पर किस तरह असर होता है। इसपर बोले- हालात आज से नहीं, पिछले कई साल से ऐसे ही हैं। पर हमें काम करना है। इतिहास उठाकर देख लें, कॉन्फ्लिक्ट एरिया में कैनवास पर मजबूत एक्सप्रेशन उभर कर सामने आते हैं। अब कश्मीर के स्टूडेंट्स के आर्ट वर्क को इंटरनेशनल लेवल पर कर सकते हैं। ऐसा इसलिए कि विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने काम करना नहीं छोड़ा। कोनसी पिछले एग्जीबिशन में हमारे स्टूडेंट्स दूसरे लेवल पर आए हैं। वो बोले- कश्मीर आर्ट का गढ़ रहा है। आर्ट का पहला कैंप साल 1909 में कश्मीर में ही आयोजित हुआ था। लेकिन सैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट दिल्ली के बाद जेएंडके स्टेट अकादमी के पास आर्ट की कलेक्शन है।

15 साल पहले हमने पंजाबी सिनेमा का जो पौधा लगाया वो आज पेड़ बन गया है

Actor's Views

एक्टर गुरप्रीत घुग्गी चंडीगढ़ में थे। इस दौरान हमने उनसे पंजाबी सिनेमा की ग्रोथ को लेकर बात की।

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

कुछ साल पहले तक पत्रकार भाई हमसे पूछा करते थे कि आप पंजाबी सिनेमा का भविष्य किस तरह देखते हो। तब हम उम्मीद की बात करते थे, पर आज खुश हूं कि पंजाबी सिनेमा का गोल्डन पीरियड चल रहा है। वो दौर चल रहा है कि साल में 52 हफ्तों में फिल्म रिलीज के लिए डेट्स नहीं मिलतीं। यह कहते हैं एक्टर गुरप्रीत घुग्गी। जल्द शुरू होने वाली अपनी नई फिल्म बाबल बांदी की प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उन्होंने ये बात कही। बोले- आज क्वालिटी सिनेमा बनने लगा है। कई बॉलीवुड फिल्में भले ही जहां मर्जी चल लें, पर पंजाबी फिल्मों के आगे वह कुछ नहीं। हालांकि मैं इस बात से खुश नहीं कि कोई मूवी नहीं चल रही। पर पंजाबी फिल्मों की तरक्की से मैं बेहद खुश हूं। अब पंजाबियों को फिल्मों की समझ आने लगी है। मुझे खुशी इस बात की है कि 15 साल पहले जब निर्देशक मनमोहन सिंह और हरभजन मान के साथ फिल्म जी आया नूं के साथ पंजाबी सिनेमा की ट्रांसफॉर्मेशन की शुरुआत हुई तो मैं उस फिल्म का हिस्सा बना। उस वक्त हमने जो पौधा लगाया वो आज पेड़ बन गया है।

पंजाबी सिनेमा लोगों को जोड़ रहा है

आज पंजाब में एक साथ 20 डायरेक्टर काम कर रहे हैं। नए प्रोड्यूसर आ रहे हैं। पहले फिल्मों के निर्देशक बाहर से रिलायंस के पैसे लगाया करते थे। अब प्रोफेशनल प्रोडक्शन हाउसेस बन गए हैं। स्टूडियोज बन आ गए हैं। इसका असर पाकिस्तान तक में भी हुआ है। भले ही हम पाकिस्तान की कोई फिल्म न लगाएं। पर पाकिस्तान में हमारी पंजाबी फिल्में दिखाई जा रही हैं। पंजाबी सिनेमा दो मुल्कों के लोगों को आपस में जोड़ रहा है। घुग्गी ने कहा- मुझे निर्देशन के भी कई ऑफर आए हैं। पर मैं निर्देशन नहीं करना चाहता सिर्फ एक्ट करना चाहता हूं। वो इसलिए, क्योंकि एक साल में हम कई फिल्मों में एक्ट तो कर सकते हैं, पर जहां तक निर्देशन की बात है तो वह एक साल में एक ही हो पाती है क्योंकि निर्देशन में स्क्रिप्ट पढ़ने, प्री-प्रोडक्शन और पोस्ट-प्रोडक्शन के लिए समय चाहिए होता है।